Dr Anshu Pandey
Assistant Professor
History department

UNIT – II : दलित आंदोलन

पश्चिमी भारत में प्रारंभिक दलित आंदोलन : सामाजिक जागरण और संगठनात्मक प्रयास

पश्चिमी भारत, विशेष रूप से महाराष्ट्र, दलित आंदोलन के प्रारंभिक और सशक्त केंद्रों में से एक रहा है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में यहाँ सामाजिक सुधार और नवजागरण की लहर ने दलित समुदाय में नई चेतना उत्पन्न की। इस क्षेत्र में ज्योतिराव गोविंदराव फुले का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। फुले ने भारतीय समाज की संरचना का गहन अध्ययन किया और यह निष्कर्ष निकाला कि जाति व्यवस्था सामाजिक असमानता की मूल जड़ है। उन्होंने यह तर्क प्रस्तुत किया कि ब्राह्मणवादी ग्रंथों और परंपराओं ने शूद्रों और अतिशूद्रों को दासता की स्थिति में बनाए रखा है।

फुले का आंदोलन केवल आलोचना तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने संगठित प्रयासों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया। 1873 में उन्होंने सत्यशोधक समाज की स्थापना की, जिसका उद्देश्य समाज में सत्य की खोज करना और जातिगत भेदभाव को समाप्त करना था। इस संगठन ने शिक्षा को सामाजिक मुक्ति का सबसे प्रभावी साधन माना। फुले का विश्वास था कि जब तक दलित और स्त्रियाँ शिक्षित नहीं होंगे, तब तक वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं हो सकते।

सावित्रीबाई फुले का योगदान इस संदर्भ में अत्यंत उल्लेखनीय है। उन्होंने सामाजिक विरोध और अपमान के बावजूद लड़कियों और दलित बच्चों के लिए विद्यालय स्थापित किए। उस समय स्त्री शिक्षा को पाप समझा जाता था, फिर भी उन्होंने अपने प्रयास जारी रखे। यह

कदम केवल शिक्षा का प्रसार नहीं था, बल्कि सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती देने का साहसिक प्रयास था।

इसी काल में छत्रपति शाहू महाराज ने सामाजिक न्याय की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए। उन्होंने शिक्षा और सरकारी नौकरियों में पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण की व्यवस्था लागू की। यह कदम अपने समय से काफी आगे था और इसने दलित समुदाय को प्रशासनिक और राजनीतिक क्षेत्र में भागीदारी का अवसर प्रदान किया। शाहू महाराज का दृष्टिकोण व्यावहारिक और प्रगतिशील था, जिसने दलित उत्थान को संस्थागत आधार दिया।

पश्चिमी भारत के इन प्रयासों ने दलित आंदोलन को वैचारिक और संगठनात्मक आधार प्रदान किया। यहाँ आंदोलन का स्वरूप अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण और सुधारवादी था, किंतु इसका प्रभाव गहरा और दीर्घकालिक था। इसने दलित समाज में आत्मविश्वास, संगठन और शिक्षा के महत्व को स्थापित किया। आगे चलकर यही आधार डॉ. अम्बेडकर के नेतृत्व में व्यापक राजनीतिक आंदोलन का कारण बना।

पश्चिमी भारत में प्रारंभिक दलित आंदोलन को सामाजिक जागरण का चरण कहा जा सकता है, क्योंकि इसने दलित समुदाय को अपनी स्थिति का बोध कराया और उन्हें यह विश्वास दिलाया कि परिवर्तन संभव है। यह आंदोलन भारतीय समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक न्याय की स्थापना की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।